दैनिक भास्कर

गुरुवार, 18 मई 2017

18 मई अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस पर विशेष

दुर्लभ पांडुलिपियों, पत्रों, स्मृतियों का अनूठा संग्रहालय

ब्यूरो | वर्धा

सांस्कृतिक आदान-प्रदान, संस्कृति की संपन्नता और लोगों के बीच परस्पर समझ, सहयोग एवं शांति को बढ़ावा देना इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस को पूरे विश्व में मनाया जाता है। इस बहाने लोगों में जागरूकता निर्माण करने के लिए 18 मई 1977 से यह दिवस मनाया जाने लगा। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में एक संग्रहालय स्थापित किया गया है। जिसमें देश के महान

शेष | पेज 16 पर

स्वामी सहजानंद सरस्वती संग्रहालय की खास बातें

संग्रहालय किसान आंदोलन के प्रणेता स्वामी सहजानंद सरस्वती के नाम पर है जिनकी प्राय सभी कृतियां यहां उपलब्ध है। यहां सन 1880 से अब तक के लेखकों की स्मृतियों से जुड़ी काफी सामग्री सुरक्षित है। पांच सौ से अधिक लेखकों के पत्र, सैकड़ों दुर्लभ चित्र, 18वीं सदी से अब तक कि ऐतिहासिक पत्रिकाओं के प्रवेशांक। परसाई, मार्कण्डेय, अमरकांत, रेणु, शेखर जोशी और मुक्तिबोध की कहानियों का फर्स्ट ड्राफ्ट। संग्रहालय में कवि शमशेर, विष्णु प्रभाकर, राम कुमार वर्मा, मुक्तिबोध,

शेष | पेज 16 पर

मुक्तिबोध की कविता पता नहीं, गान कोकिला लता मंगेशकर का पदमा सचदेव को लिखा पत्र, प्रेमचंद, राहुल सांकृत्यायन, हजारीप्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह आदि लेखकों ने लिखी चिट्ठियां इस संग्रहालय को समृद्ध करती है। इनके अलावा तस्वीरों में छिपी कहानियां संग्रहालय के सौंदर्य और आकर्षण को बढ़ाती है। लंदन में लता मंगेशकर के साथ पदमा सचदेव, अज्ञेय के साथ विष्णु प्रभाकर, बाबा नागार्जुन, महादेवी वर्मा आदि के चित्र यहां आप देख सकते है। महात्मा गांधी का जब सेवाग्राम में थे तब उन्होंने अन्नपूर्णानंद को पोस्ट कार्ड भेजा था वह भी संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया और उसमें लिखा गया एक-एक शब्द आप आसानी से पढ भी सकते हैं। यह पत्र उन्होंने 26 जून 1941 को लिखा था। यह संग्रहालय बहुआयामी स्वरूप का संग्रहालय है जिसमें यहां 1880 से अब तक कि 116 पत्रिकाओं के पहले के अंक मौजूद है। इनमें उचित वक्ता, प्रतीक, आलोचना, पक्षधर, नयी कविता, हंस , वर्तमान, कल्पना, नटरंग, नांदी, प्रतिबद्ध कविता, इतिहास बोध, वागर्थ, प्रतिमान, कबीर, मंच, संकेत, अभिमंच, इतिहास बोध, साखी, आयाम, दृष्टिकोण, अभिधा, सार्थक, परुष, नई कहानी, कदम, विकल्प, समवेत, आवर्त, अलाव, शिखर, प्रयोजन, समारंभ, अभिप्राय, युवा, प्रस्ताव, प्राइज लेकिन, लोकदस्ता तथा समकालीन सृजन है।

स्वामी सहजानंद...

रामविलास शर्मा, रमेश कुंतल मेघ जैसे अनेक साहित्यकारों की संपूर्ण प्रकाशित-अप्रकाशित पांडुलिपियां, उनकी सारी पेंटिंग्स तथा दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाले सामान सुरक्षित है। निराला की सुप्रसिद्ध कविता जुही की कली की मूल प्रति उन्हीं की हस्तलिपि में। महात्मा गांधी, प्रेमचंद्र, नागार्जुन, केदार, रघुवीर सहाय, रामधारी सिंह दिनकर, मुक्तिबोध, धूमिल की लिखावट में उनके पत्र और पाण्डुलिपियां, लता मंगेशकर समेत कई विभूतियों के खत, डायरियों और स्मृति से जुड़ी सामग्री है।

दुर्लभ पांडूलिपियों,...

साहित्यकारों की पांडुलिपियां, हिंदी पत्रिका के प्रथम अंक, साहित्यकारों के जीवन से जुड़ी विभिन्न सामग्री तथा उसके निजी उपयोग की वस्तुएं रखी गयी है। कहा जा सकता है कि यह संग्रहालय दुर्लभ पांडुलिपियों, पत्रों और स्मृतियों का एक घर है। एक शोधार्थियों, साहित्यकारों के लिए अपनी तरह का अनूठा अभिलेखागार है। इस संग्रहालय में हिंदी लेखकों के कालजयी कृतित्व की सैकड़ों पांडुलिपियां, पत्र तथा दर्जनों दुर्लभ चित्र सुरक्षित रखे गए हैं। यह संग्रहालय बनाकर विश्वविद्यालय ने शोध और शिक्षा की दुनियां में अपूर्व और अद्वितीय कार्य किया है। 30 दिसंबर 2011 को प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. नामवर सिंह ने इस संग्रहालय का उद्घाटन किया। संग्रहालय को लेकर कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र का कहना है कि 19वीं सदी से अब तक की ऐतिहासिक महत्व वाली पत्रिकाओं ओर संकलनों के संग्रह से यह संग्रहालय समृद्ध है। इन कृतियों को देखने और पढ़ने का अनुभव साहित्य के इतिहास के जीवंत स्पर्श का अहसास कराता है। समता भवन स्थित इस संग्रहालय में देखी जा सकती है। निराला की लिखावट में उनकी कविता जुही की कली, केदारनाथ अग्रवाल की कविता गुलाब की पांडुलिपि, हरिवंश राय बच्चन का रामनिरंजन सिंह परिकल को लिखा पत्र, नागार्जुन की हस्तलिपि में उनकी कविता, रघुवीर सहायक की कविता स्वाधीन व्यक्ति